Introduction

प्राक्कथन
(अंतर दर्पण दर्शन)

महा'**समुद्र**' सलीलकी थाह प्राप्त करना-'**रत्नाकर**'की गहनताका ताग लेना, शायद मानवके लिए साधारण-सी बात है, बनिस्बत दुष्करातिदुष्कर **ज्ञानांभोनिधि**के महार्घ रत्नाबारकी सपूर्ण रूपेण उपलब्धि, जिसे अर्जित किया जा सकता है, एकमात्र **'इन्द्र'** तुल्य महामहिमके कृपावत सहयोग युक्त अथक परिश्रम और अनवरत प्रयास से । अत **'विनीत' 'जगत'को 'नित्यानंद'का** आस्वाद करवानेवाली उस **'वल्लभ'** वस्तुकी प्राप्त्यानतर होनेवाला **'आत्मानंद'**का अनुभव ही अलौकिक अध्यात्म **'किरणों'**का **'जनक'** माना जा सकता है।

सयम जीवन पूर्व ज्ञानार्जनके सजोये हुए स्वप्नोको उजागरकर्ता–साधुजीवनमे सशोधन कार्यक्षेत्रमे पदार्पण करके आत्मज्ञान कवलको विकस्वर करवानेवाला, अमूल्य परामर्श प्राप्त हुआ–सर्वधर्म समन्वयी, प्रेरणामूर्ति प पू **श्रीमद्विजय जनकचंद्र सुरीश्वरजी म.सा.**से, और न्यायाभोनिधि, सविज्ञ मार्गीय आद्याचार्य **श्रीमद्विजयानंद सुरीश्वरजी महाराजजीकी** स्वर्गारोहण शताब्दी निमित्त उन्हीके व्यक्तित्व एव कृतित्व विषयक सशोधनकी दिशा प्रदान करके इस कार्यक्षेत्रमे अग्रसर होनेमे प्रोत्साहित किया, परमार श्रत्रियोद्धारक, चारित्र चूडामणि **श्रीमद्विजय इन्द्रदिन्न सुरीश्वरजी म.सा.ने.**

परिचय :---

उदयाचल पर अपनी आशालताकी लालिमा बिखेरकर जन-मनको प्रोत्साहित करनेवाली प्रत्येक उषा और उम्मीदोका थाल भरने हेतु अस्ताचलकी गोदमे समा जानेवाली प्रत्येक सध्या समयकी निरतर रफ्तारमे गतिशील है । ऐसे अनवरत काल प्रवाहकी बहती धारामे न बहनेवाले, चलती गाडी पर न चढनेवाले हवाई पखोकी उडान न भरनेवाले–अपने अनूठे व्यक्तित्व, महत् प्रभाव–प्रतिभा और प्रतापके बल पर सदियो पर्यत जन-मानसको प्रेरित करनेवाले अपूर्व–अनुपम, आचार-विचार-वाणीसे असाधारण स्थायी मान–स्तभ स्थापित करनेवाले युगप्रधान-महापुरुष न्यायाम्भोनिधि-सविज्ञ आद्याचार्य **श्रीमद्विजयानंद सुरीश्वरजी म.सा.की स्वर्गारोहण शताब्दी समारोहके** त्रिवर्षीय विविध आयोजनोमे उन महा–प्राज्ञ दिग्गज विद्वानके साहित्यकी परिमार्जना रूप शुद्ध हिन्दीमे उसका अनुवाद-समालोचना-सशोधनादिको समाविष्ट किया गया था । वर्तमान गच्छाधिपति गुरुदेव **श्रीमद्विजय इन्द्रदिन्न सुरीश्वरजी म.सा.ने** सशोधन कार्य (शोध-प्रवन्ध)के लिए मुझे अनुप्राणित करके प्रोत्साहित किया । परिणामत दस वर्ष पूर्व **श्रीमद्विजय जनकचंद्र सुरीश्वरजी म.सा.** द्वारा वपन की गई मेरी अतरग भावनाको अकुरित होनेका अवसर अनायास प्राप्त होनेसे मनमयूर भावविभोर बन कर नर्तन करने लगा और कार्यारम्भ हुआ हम सबकी छत्रछाया–**प्रवर्तिनी साध्वीश्री विनीता श्रीजी म.सा.**की पुनित निश्रामे ।

व्यक्तित्व परिवेश :---विशिष्ट वाङमयसे प्रस्फुटित वैचारिक वलयोसे मुखरित होनेवाला मननीय-मीमासक-समलोचक-दार्शनिक-सैद्धान्तिक-विधेयात्मक-अकाट्य तर्क पक्तियोसे वादी मुखभञ्जक-समस्त मानव समाज हितकाक्षी स्वरूप काव्यसे प्रवाहित परमात्मा प्रति सम्पूर्ण समर्पित एव मुक्ति प्राप्तिकी तडपसे छटपटाता भक्त हृदय-अमोघ काव्य कौशल युक्त सूत्रात्मक समर्थ उपदेष्टा रूप और आत्मानदकी अनुभूतिके बाद सर्वोत्कृष्ट सत्य गवेषक सत्य प्ररूपक, सत्य प्रसारक जीवनशैलीके निर्मल निर्झर सदृश प्रवाहित असाधारण-अद्वितीय-उदारचरित महानुभावके व्यक्तित्व एव कतित्वको आन्वेक्षिकी दृष्टिसे टटोलनेका प्रसग प्राप्त होनेसे मै अपने आपको सौभाग्यशालीनी मानती हूँ ।

आपके उत्तुग शिखर सदृश साहित्यका अवगाहन करते हुए, मैने अपने आपको वामन अनुभूत किया । कहाँ सागर समान विशाल श्रुताभ्यासी, सिधु सदृश गभीर चितक, रत्नाकर तुल्य ओजस्वी-बहुमुखी प्रतिभाके प्रतिमान और कहाँ मै ? फिरभी आत्माको आनद प्रदाता–सदाबहार विकस्वर पुष्प सदृश मद-मद मुस्कराते और दिव्याशिष बरसाते हुए गुरुदेव श्री आत्मानदजी म की प्रेरक प्रतिमान मानो मेरे अतस्तलको नवपल्लवित किया । मैने हौसला पाया और उनकी तरह दृढचित्त बनकर कार्यका सम्पन्न किया। जैसे

उनके साहित्य पर्यालोचनके इस महत्वपूर्ण कार्यको उनकी ही बदौलत परिपूर्णता प्राप्त हुई ।

कृतित्व परिवेश :— साम्प्रतकालमे विशेषत शिक्षित, बौद्धिक, गभीरताशून्य, सतही विचारधाराधारक वर्गमे **जैन दर्शनके सिद्धान्त**–उत्तमोत्तम तत्त्वत्रयी और सर्वोत्कृष्ट रत्नत्रयी स्वरूप–**जैनधर्मके क्रियानुष्ठान**-जिनभक्ति-दर्शन-पूजा, श्रावक-साधुचर्यादि-**जैन समाजके इतिवृत्त**–आर्हत् धर्मकी शाश्वतता/प्रारम्भ-प्रचलन, ससारकी अविच्छित्त/सृष्टि सर्जन, अतीत-अनागत-वर्तमान तीर्थंकरोका स्वरूप–**जैन साधु-साध्वी** या सत महापुरुषो एव सती नारियोकी उत्तम जीवन गाथाये–**जैन आचार, विचार, विधियाँ**–(अधेर नगरीके गडू राजा सदृश) सर्वधर्म एक समानताकी मान्यता, धर्म-कर्मबध-निर्जरा, पाप-पुण्य, ससार-सिद्धत्व-प्राप्ति आदि अनेकानेक विषयक भ्रामक खयालात, गलत फहमियॉ और आधुनिक फैशन परस्तीको अपनी प्रवाहित जिदगानीमे देखते-सुनते और अनुभव करते हुए अतरमे एक कसक उठती थी, उन महानुभावोके अज्ञानसे हृदयमे उनके प्रति एक करुणाकी लहर फैल जाती थी, अत इन सभीके स्पष्ट, स्वस्थ, सत्य-यथास्थित स्वरूपको उद्घाटित करके सद्धर्म अगीकरणके इच्छुक अधिकारी और धर्मतत्व जिज्ञासुओको सद्बोध प्रदान हेतु मन मचल रहा था ।

इन अभिलाषाओको साकार करनेका अवसर, मानव जन्मके उच्चतम लक्ष्य सपादन हेतु योगाधिकारी योद्धा बनकर शास्त्र प्राविण्य शस्त्र द्वारा, समाज समरागणमे कर्म-शत्रु विजेता और धार्मिक हार्दकी विजय वैजयन्ती फहरानेवाले शुभात्मा, जिन शासन रक्षक, आर्हत् शासन शृगार आचार्य प्रवर श्रीमद्विजयानद सुरीश्वरजी म की स्वर्गारोहण शताब्दी समारोह निमित्त इस शोध-प्रबन्धने प्रदान किया । इन सर्वका शब्द देह रूप अवतरण करना, हाथमे धरतीको धारण करने या केवल निज बाहुबलसे ही स्वयभू-रमण समुद्र तैरने सदृश अत्यधिक दुष्कर कार्य है, क्योकि महापुरुषके अभिमतसे सद्भूत गुण वर्णनमे कभी भी किसी व्यक्ति द्वारा अतिशयोक्ति हो ही नही सकती है, सर्वदा अल्पोक्ति ही प्रदर्शित हो सकती है–अथवा अगाध-अनंत ज्ञान राशिको वीतराग–सर्वज्ञ परमात्मा भी देह (वचन) योग और आयु मर्यादाके कारण पूर्णरूपेण उद्घाटित करनेके लिए असहाय है, जैसे गागरसे सागर-सलीलका प्रमाण निश्चित करना असम्भव-सा है । अत यहॉ बालचेष्टा रूप उन सर्वकी एक सामान्य झलक ही आचार्य प्रवरश्रीके साहित्यके पर्यालोचन रूप और उनके ही साहित्यके सहयोगसे दर्शित करवायी जा सकी है ।

मेरे नम्र मतव्यानुसार किसी भी विवेच्य विषय वस्तुके सबधमे तद्विषयक निष्णातका मंतव्य सर्वोपरि-श्रेष्ठतम और अतिम, ग्राह्य योग्य माना जा सकता है, ठीक उसी प्रकार धर्म विषयक किसी भी विवेचनाका निर्णायक ग्राह्यत्व उस धर्मके तटस्थ-निष्पक्ष धर्माधिकारीके गवेषणापूर्ण सत्यासत्य और तथ्यातथ्य निरूपणमे ही समाहित होता है, जो हमे रोचक-सार्थक एव ज्ञानगम्य विचार-वाणी-वर्तनकी सतुलन जीवनधाराके स्वामी, भव्य जीवोके प्रतिबोधक श्री आत्मानदजी म के तत्कालीन एवं वर्तमानकालीन अनेक उलझी गुत्थियोको सुलझानेवाले अनूठे परामर्श-युक्त विशद वाड्मयसे सप्राप्त होता है । अत गुरुदेव श्रीमद्विजय इन्द्रदिन्न सुरीश्वरजी म सा की प्रेरणा झेलकर श्री आत्मानदजी म के साहित्यके आकलनके साथ ही साथ अपने अतरकी आरजूको इस शोध प्रबन्धन प्रतिपादित करनेका अवसर उपलब्ध होनेसे मुझे धन्यताका अनुभव हो रहा है ।

शोध प्रबन्धका प्रारूप — इस शोध प्रबन्धको अखड अक–नव–पर्वोमे सकलित करनेका आयास किया गया है, जिसका अभिप्रेत भी अक्षुण्ण और उज्ज्वल कीर्तिकलेवरधारी, वीर-शासनके अभिन्न अग आचार्य प्रवर श्रीमद्विजयानद सुरीश्वरजी म के व्यक्तित्व एव कृतित्वके अनुसधानके माध्यमसे जैनधर्मके विभिन्न अगोको प्रदर्शित करके सुरीश्वरजीके उत्कृष्ट योगदान रूप उनके उपकारोका स्मरण करते-करवाते आपके ऋण से उऋण होनेका क्षुल्लक प्रयत्न मात्र किया है ।

प्रथम पर्वमे जैनधर्मकी परिभाषा, जैनधर्मकी गुणलक्षित विविध पर्यायवाची सज्ञाये और आगमादिके प्रमाणादिसे उनकी सार्थकता एव पुष्टि–साम्प्रतकालीन शका-कुशकाये या भ्रान्ति-विभ्रान्तियोका नीरसन और सात्त्विक सत्य सिद्धान्तोका प्रणयन–अनादिकालीन अनत चौबीसीयोको निर्दिष्ट करते हुए वर्तमान चौबीसीके तीर्थंकरोके संक्षिप्त

जीवन परिचय एव भ महावीरकी पट्ट परपराके श्रीसुधर्मास्वामी आदि अनेकानेक गुणाढ्य सूरिपुगवोके क्रमिक परिचय देते हुए उस परंपरामे तिहत्तरवे स्थान पर अपने आचार्य प्रवर श्रीमद्विजयानद सुरीश्वरजी म का स्थान निश्चित किया गया है ।

द्वितीय पर्वमे सत्यकी ज्वलत ज्योत या सत्यनिष्ठाकी प्रतिमूर्तिरूप उन महामहिम विलक्षण व्यक्तित्वके सकायोको--जन्मजात और अर्जित किये गुण-स्वभाव-लक्षण और विश्वस्तरीय, स्वपर कल्याणकारी, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, साहित्यिक, विभिन्न कलात्मक व्यक्तित्व एव प्रवचन प्रभावक, अजेय वादीत्व, अप्रतीम लोकप्रियता तथा अनेक आत्मिक, आध्यात्मिक गुण-लब्धि-सिद्धियॉ प्रापकादि गुणोकी गागरको अतर्साक्ष्य एव बहिर्साक्ष्याधारित संचित करके उन अक्षुण्ण-अमूल्य जीवन मूल्योको सक्षेपत अवतारित किया है । तो तृतीय पर्वमे आचार्यश्रीके जीवनतथ्योका सम्बन्ध ज्योतिष शास्त्रके अवलम्बनसे, पूर्व-जन्मोपार्जित कर्मसे स्थापित करनेका प्रयत्न किया गया है । अर्थात् पूर्व जन्मकृत कर्माधारित घटनाओका जीवनमे निश्चित क्रमसे, निश्चित कालमे, निश्चित प्रमाणमे, निश्चित रूपसे अवतरण होता है जिसे ज्योतिष शास्त्रके सहयोगसे ज्ञात करके पूर्व प्रबन्धित योजनाओके बल पर, उन अनिच्छनीय घटनाओका प्रतिषेध करते हुए जीवनको कल्याणकारी व सौदर्यशाली बना सकते है ।

ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिकादिके परिप्रेक्ष्यमे 'लाखोमे एक' के अभिव्यजक, उदारचरित, उन्नीसवी शतीके अखड तेजस्वी ज्योतिर्धर-श्रीमद्विजयानद सुरीश्वरजीके इस पार्थिव प्रकाश पुजके निरीक्षणान्तर प्ररूपणाका स्रोत उस अतीव महत्त्वपूर्ण फलककी ओर मोड पाता है, जहॉ आपकी प्रौढ साहित्यिक रचनाओका सरसरी दृष्टिसे सिहावलोकन करते-करते आपके विशाल साहित्य अध्येता, गहन चिंतक, मौलिक मीमासक, शिष्ट सस्कृतिके अभिभावक, सामान्य जीवन प्रसगोमे भी आध्यात्मिक परामर्शके अनुसधाता, अजस्र एव अकाट्य तर्कशक्ति सम्पन्न अजेयवादी, न्यायाम्भोनिधि, धुरधर विद्वान, तत्कालीन धीमान् सुज्ञजनोके पृष्टव्य-साहित्य मनीषी, भगवद् भक्त हृदयी, जन्मजात, नैसर्गिक कवि-कौशल एव कलाप्राविण्य आदि रूपोका विश्लेषणात्मक दिग्दर्शन करवाया गया है ।

सर्व दर्शनो एवं सर्व प्रचलित धर्मोके बाह्याभ्यतर स्वरूपके एक एक विषयको विविध दृष्टिबिदुओसे स्याद्वाद और अनेकान्तवादकी निष्पक्ष तुला पर, पैनी दृष्टिसे, दुर्द्धर्ष परिश्रम साध्य, तटस्थ परिक्षण करनेमे ही अपने स्व और सर्वको समर्पितकर्ता और उसे शुद्ध स्वर्णिम साहित्यको सरल फिर भी प्रभावोत्पादक, सुगठित एव साहित्यिक सजावटसे सुशोभित, अनूठी शैलीमे प्रस्तुतकर्ता, श्रेष्ठ समालोचक व प्रमाणिक प्रतिपादक, जैनधर्मके विश्वस्तरीय प्रसारक साहित्यविद् आचार्य प्रवरश्रीके इस असाधारण-विलक्षण साहित्यके पर्यालोचनको पर्व चतुर्थसे अष्टममे समाहित किया है । जिनमे चतुर्थमे गद्य-पद्य कृतियोके विषय वस्तुका परिचय, पचममे गद्य साहित्य एव षष्ठममे पद्य साहित्यकी समालोचना, सप्तममे उसका विश्वस्तरीय प्रभाव और अष्टममे पूर्वाचार्यों एव समकालीन साहित्यविदोके प्रभाव और तल्यातुल्यता समाविष्ट की गई है । अतिम पर्वमे इन सभीका सकलन-उपसहार रूपमे प्रणीत किया गया है ।

ऋण स्वीकार एवं धन्यवाद :---

इस महत्त्वपूर्ण-महान कार्यकी सिद्धिमे अनेक कार्यकर्ताओकी कार्यशक्तियॉ एवं हार्दिक निष्ठापूर्ण सहयोग उल्लेखनीय है, जिनकी बिना सहायता इसकी परिसमाप्ति होना शायद ही सभव बन पाता । जिनके कृपावत ऋणकी बोझिलता भी जीवनके परम आह्लाद रूप अनुभूत होती है,--ऐसे परमोपकारी आचार्यद्वय--सशोधन क्षेत्रमे पदार्पणके लिए सर्वप्रथम प्रेरणास्रोत, सरलाश्रयी श्रीमद्विजय जनकचद्र सुरीश्वरजी म सा और श्रीमद्विजयानद सुरीश्वरजी म सा की स्वर्गारोहण शताब्दी निमित्त शोधकार्यकी अग्रीमताको लक्ष्य करके शोध प्रबन्धके 'विषय'को सूचितकर्ता श्रीमद्विजय इन्द्रदिन्न सुरीश्वरजी म सा --के अतःकरणके प्रेरणा-पियूषवर्षी आशीर्वाद एवं बारबार प्रोत्साहन देकर किये गये परमोपकार, आजीवन मेरी स्मृतिके सीमा प्रतीक--स्मारक रूप बने रहेगे। साथ ही साथ अन्य जिन आचार्य भगवतो एव मुनि भगवतोकी अमादृष्टि भी इसे अभिसिचित करती

रही हूँ–प्रमुख रूपसे न्याय विषयक मार्गदर्शन प्रदाता श्रीमद्विजय राजयश सूरि म.सा., आगमादिके सदर्भ विषयक मार्गदर्शक श्रीमद्विजय शीलचद्र सूरि म सा , काव्य विषयक मार्गदर्शक उपा श्री यशोभद्र विजयजी म सा योगीराज श्री चद्रोदय विजयजी म सा आदिके ऋणको कैसे चूका सकती हूँ ? इस शोधकार्यमे जिनकी पावन उष्मापूर्ण निश्रा प्राप्त हुई वे परम श्रद्धेय प्रवर्तिनी श्री विनिताश्रीजी म सा , एव इस शोध प्रबन्धके लिए अनुज्ञा प्रदात्री परमोपकारी गुरुणी श्री यशकीर्तिश्रीजीम सा , और अन्य सभी बडे-छोटे सहवर्तिनी साध्वीजी महाराजोके असीम वात्सल्य और स्नेहपूर्ण सर्वागीण सहयोगको कभी भी भूलाया नही जा सकता, तो अपने अक्षर देहसे-परोक्ष प्रोत्साहन प्रदात्री श्रीसुवर्ण प्रभाश्रीजीम श्रीभद्रयशाश्रीजी म , श्री राजयशाश्रीजी म , श्री सौम्य प्रभाश्रीजी म , श्री तीर्थरत्ना श्रीजीम आदिको भी कैसे भूला सकती हूँ ? गुरुकुलके इन सर्व हितैषी जनोके निःस्वार्थभावी, उदारदिल, अनुग्रहको मूकतासे अत करण पूर्वक अगीकृत करते हुए उनके पुनित पादारविंदमे नतमस्तक होती हूँ ।

इस शोध प्रबन्धमे प्राण भरनेवाली-सरलाश्रयी, प्रमुख सहायिका-सर्वदा, सर्व प्रकारके सहयोगमे तत्पर, उदारचित्त राहबर, प्रबुद्ध प्रेरणादात्री डॉ कु प्रेमलताजी बाफना (रीडर, हिन्दी विभाग, कलासकाय, म स विश्वविद्यालय-बडौदा)के कुशल दिग्दर्शन एव सूक्ष्मैक्षिक निर्देशनान्तर्गत यह शोधकार्य अभियान अति सुचारुपूर्ण एव सुव्यवस्थित रूपसे गंतव्यको प्राप्त कर सका है । अत उनके मुखरित ऋणको भी हार्दिक धन्यवादके साथ स्वीकार करती हूँ, तो गौण रूपसे सहयोगी बननेवाले डॉ अरुणोदय जानी (जिन्होने तर्क सग्रहादि न्याय विषयक अध्यापनके साथ आचार्य प्रवरश्रीके ग्रन्थोमे उनके प्रयोगोंको स्पष्ट करनेमे उदात्त योगदान दिया), मेरे भूतपूर्व सहाध्यायी डॉ रजनीकान्त शाह (जिन्होने अनेक बार साहित्यिक परामर्श दिये), (मेरे गृहस्थ जीवनके)भाईश्री दिनेश-नयनाबेन, गौतम एव बहन जयदेवीके योगदानको भी याद कर लेना अनुचित न होगा। इस शोध प्रबन्धके चित्रकला कार्यमे योग प्रदात्री कु जयदेवी एव ज्योतिष विषयक परिपूर्ण मार्गदर्शक-दिग्दर्शक-निर्देशक तथा कॉम्प्युटर टाइपिग और प्रुफशोधनादि अनेक प्रकारसे हार्दिक लागणी युक्त एकनिष्ठ सहायक श्री गौतमकुमारकी सहायतासे इस शोध प्रबन्धमे वैविध्यता एवं निखार लाया जा सका है, अत उनका अत करणसे हार्दिक धन्यवाद करती हूँ ।

इस शोध प्रबन्धमे उपयुक्त बहुविध-बहुमूल्य-विशद वाड्मय-समसामायिक पत्रिकाये, शताब्दी ग्रन्थ, अन्य शोध प्रबन्ध-ग्रन्थ, विभिन्न विषयक भिन्नभिन्न भाषाभाषी साहित्यिक रचनाओके प्रणेता महामनीषियो, प्राज्ञपुरुषो एव विलक्षण व्यक्तित्वधारियोके परमोपकारको दृष्टिसमक्ष रखते हुए उनके पावन चरण सरोजोमे श्रद्धावनत होती हूँ तो पूर्वाचार्योके विलक्षण वाड्मय एव आगमिक साहित्यके अवलबनके लिए उन सभी उदात्त चरित्र प्रातिभ पुरुषोके ऋणको कैसे चूका सकती हूँ ? केवल नतमस्तक होकर अभिवादन ही करती हूँ और उस अमूल्य निधिको सचितकर्ता-सग्राहक श्री वल्लभ स्मारक शिक्षण निधि, दिल्ही, श्री आत्मानद जैन सभा-भावननगर, श्री आत्मानद जैन सभा-अबाला, जबूसर ज्ञान भडार, श्री हस विजयजी ज्ञानमदिर-बडौदा, श्री महावीर जैन विद्यालय बडौदा, श्री हसा महेता लायब्रेरी, ओरिएन्टल लायब्रेरी, अहमदाबाद-बॉम्बे-खभातादि अनेक ज्ञानभडार एव पुस्तकालयोसे सदर्भ ग्रन्थ-सहायक पुस्तके प्राप्त करवानेवाले उनके सभी व्यवस्थापक महानुभावोके उपकारको भी याद करना अपना कर्तव्य समझती हूँ । इसके अतिरिक्त जिन्होने इस शोध प्रबन्धके टाइपिग हेतु आर्थिक सहयोग दिया–श्री महिला जैन उपाश्रय, जानीशेरी, बडौदाके प्रमुख कार्यकर्त्री श्रीमति चपाबेन, श्रीमति सुशीलाबेन, श्रीमति सुधाबेन आदि, टाईपराइटर, 'श्री कॉपी सेन्टर' वाले श्री विपुलभाई और अन्य सहयोगी बिपिनभाई आदि सभीके प्रति भी धन्यवाद प्रेषित करती हूँ ।

अतत इस शोध प्रबन्धके नामी-अनामी, प्रत्यक्ष-परोक्ष, जाने-अनजाने सभी सहकारी-सहयोगी,–जिन्होने सबल सबल बनकर मेरी भावनैयाको किनारा प्राप्त करवाया है उन सभीके मुखरित ऋणको मूकपने ग्रहण करते हुए आभार प्रकट करती हूँ ।

मेरी अतराभिलाषा :–जनजनके हृदयसिंहासन स्थित सम्राट, व्यक्ति केन्द्रित फिर भी समष्टि व्याप्त,

रोमरोमसे रत्नत्रयीमे सराबोर, दीपक या दिवाकरातीत प्रभावान, चदन या चद्रातीत शीतल, नरेन्द्रो और देवेन्द्रोंकी सर्व सिद्धि-समृद्धिको निस्तेज बनानेवाले मगलमय-श्रेष्ठतम-शुद्धाचरणके स्वामी, युगानुरूप चिंतन चिरागका प्रकाश वाणीसे विस्तीर्णकर्ता, जनसमाजके प्रेरक-जैन समाजकी चेतनाको सचरित करनेवाले उस युगपुरुषकी जीवन किताब (व्यक्तित्व)के प्रत्येक पृष्ठ पर प्रगतिके प्रतीक अकित है । उन प्रत्येक अंकनको उजागर करनेका यथामति-यथशक्य प्रयास करनेके हेतु है मात्र (१) स्वर्गारोहण शताब्दी वर्ष निमित्त उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करके स्वको धन्य एव सर्वको धीमत बनाना, (२) धीमानोके पृष्टव्य उन प्रातिभ प्राज्ञकी प्रज्ञाके पुष्पोकी अछूती सुवासको वितरित करके विश्वको वासित करना, (३) शैक्षणिक, साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक, आचरणादि विभिन्न घटकोके अनुरूप उनके साहित्यालोचन द्वारा अध्येताओको परितोष प्रदान करना, (४) अद्यतन शिक्षाप्राप्त अज्ञानियोके सर्वांगीण सद्बोध सप्रेषण द्वारा उन्हे सबुद्ध बनाना; (५) महदशसे साम्प्रत साधु समाजके तकरीबन दो तिहाई भागके साधु समुदायके सम्माननीय गुरुपद बिराजित उन गीतार्थ-गीर्वाण गुरु-राजकी शनैःशनैः लुप्त होती जा रही अक्षुण्ण स्मृतिको आधुनिक समाजके-साम्प्रत श्रीजैनसघके अंतःस्तलकी गहराईसे उजागर करते हुए अवनि अबरके तेजस्वी तारककी ज्योतिको दीप्र बनाना, (६) उनके समान चारित्र निर्माणमे प्रयत्न-शीलोको पथ प्रदर्शित करना, (७) उनके प्राचीन फिर भी नित्य नूतन प्रतिमानोसे प्रेरणा ग्रहण करके अधुना उनकी सर्व विध सेवाओको कुसुमाजलि अर्पित करना ।

इसमे कहॉ तक कामियाबी हासिल हुई है उसका परिमाण तो समय ही निश्चित करेगा । उनके विशद वाङ्मयके प्रत्येक सघटकका-प्रत्येक कृतिका विश्लेषण एक-एक स्वतत्र ग्रन्थकी अपेक्षा रखता है, फिर भी केवल तीन वर्षके अहर्निश-अनवरत-उल्लासमय अध्यवसाय और एकनिष्ठ लगनसे, सर्वग्राही दृष्टिबिदुके ध्येयको यथोचित रूपमे मूल्याकित करके शोधप्रबन्धकी सम्पन्नताका परितोष अनुभव कर रही हूँ । अततोगत्वा इस शोध प्रबन्धके प्रमाणित सत्य निरूपणमें श्रमसाध्य-यथामति यत्न करते हुए प्राप्तव्य सर्व सौंदर्य-सुरभि देव-गुरुकी कृपाके ही सुफल है, और छोटी-मोटी क्षतियोके लिए मेरी अल्पज्ञ छद्मस्थता ही जिम्मेदार है । सुज्ञ परिखोकी पर्यवेक्षिका दृष्टिके अनुरूप इसके निरीक्षणमे, अपनी छाद्मस्थिक अल्पज्ञता-ईषत्क्षमता-रचमात्र दक्षताके सबब इस भगीरथ कार्यकी सम्पन्नतामे उन सर्वज्ञ-वीतरागके निर्मलवाणी निर्झरोको यथायोग्य दिशा प्रदान करनेमे अन्यथा प्ररूपणा हुई हो, या केवलीभाषित आगम विरुद्ध अल्पांश प्रारूपका भी दर्शन हो, अथवा उन सद्धर्म सरक्षकके मतव्यको यथातथ्य रूपमे निरूपित करनेमे असफलता झलकती हो उन सर्वके लिए सुज्ञानीसे त्रिविध त्रिविध क्षमा प्रार्थना–**"मिच्छामि दुक्कडं"** है। उदारमना इसे क्षमस्व मानकर क्षमा प्रदान करे। **इति शुभम्** ।

Kiranyasha Shreeji

Dated - 15-4-97